

# श्री जपु जी साहिब

१ ओं सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु  
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

॥ जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥

है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥

चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥

भुखिआ भुख न उतरी जे बंन पुरीआ भार ॥

सहस सिआणपा लख होहि

त इक न चलै नालि ॥

किव सचिआरा होईअै किव कूड़ै तुटै पालि ॥

हुकमिरजाईचलणां नानक लिखिआ नालि ॥१॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥  
 हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥  
 हुकमी उतमु नीचु हुकमि  
 लिखि दुख सुख पाईअहि ॥  
 इकना हुकमी बखसीस  
 इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥  
 हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥  
 नानक हुकमै जे बुझै  
 त हउमै कहै न कोइ ॥२॥  
 गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥  
 गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥  
 गावै को गुण वडिआईआ चार ॥  
 गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥  
 गावै को साजि करे तनु खेह ॥  
 गावै को जीअ लै फिरि देह ॥

गावै को जापै दिसै दूरि ॥  
 गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥  
 कथना कथी न आवै तोटि ॥  
 कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥  
 देदा दे लैदे थकि पाहि ॥  
 जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥  
 हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥  
 नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥  
 आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥  
 फेरि कि अगै रखीअै जितु दिसै दरबारु ॥  
 मुहौ कि बोलणु बोलीअै जितु सुणिधरे पिआरु ॥  
 अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥  
 करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥  
 नानक एवै जाणीअै सभु आपे सचिआरु ॥४॥



| थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥  
 | आपे आपि निरंजनु सोइ ॥  
 | जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥  
 | नानक गावीअै गुणी निधानु ॥  
 | गावीअै सुणीअै मनि रखीअै भाउ ॥  
 | दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥  
 | गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं ॥  
 | गुरमुखि रहिआ समाई ॥  
 | गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा ॥  
 | गुरु पारबती माई ॥  
 | जे हउ जाणा आखा नाही ॥  
 | कहणा कथनु न जाई ॥  
 | गुरा इक देहि बुझाई ॥  
 | सभना जीआ का इकु दाता ॥  
 | सो मै विसरि न जाई ॥ ५ ॥

जपुजी

(७)

साहिब

तीरथि नावा जे तिसु भावा ।  
विणु भाणे कि नाइ करी ॥  
जेती सिरठि उपाई वेखा ।  
विणु करमा कि मिलै लई ॥  
मति विचि रतन जवाहर माणिक  
जे इक गुर की सिख सुणी ॥  
गुरा इक देहि बुझाई ॥  
सभना जीआ का इकु दाता  
सो मै विसरि न जाई ॥६॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥  
नवा खंडा विचि जाणीअै  
नालि चलै सभु कोइ ॥  
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥  
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥  
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥

नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥  
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

सुणिअै सिध पीर सुरि नाथ ॥  
सुणिअै धरति धवल आकास ॥  
सुणिअै दीप लोअ पाताल ॥  
सुणिअै पोहि न सकै कालु ॥  
नानक भगता सदा विगासु ॥  
सुणिअै दूख पाप का नासु ॥८॥

सुणिअै ईसरु बरमा इंदु ॥  
सुणिअै मुखि सालाहण मंदु ॥  
सुणिअै जोग जुगति तनि भेद ॥  
सुणिअै सासत सिम्रिति वेद ॥  
नानक भगता सदा विगासु ॥  
सुणिअै दूख पाप का नासु ॥९॥

सुणिअै	सतु	संतोखु	गिआनु	॥
सुणिअै	अठसठि	का	इसनानु	॥
सुणिअै	पड़ि	पड़ि	पावहि मानु	॥
सुणिअै	लागै	सहजि	धिआनु	॥
नानक	भगता	सदा	विगासु	॥
सुणिअै	दूख	पाप	का नासु	॥१०॥
सुणिअै	सरा	गुणा	के गाह	॥
सुणिअै	सेख	पीर	पातिसाह	॥
सुणिअै	अंधे	पावहि	राहु	॥
सुणिअै	हाथ	होवै	असगाहु	॥
नानक	भगता	सदा	विगासु	॥
सुणिअै	दूख	पाप	का नासु	॥११॥
मंने	की	गति	कही न जाइ	॥
जे	को	कहै	पिछै पछुताइ	॥
कागदि	कलम	न	लिखणहारु	॥



मंने का बहि करनि वीचारु ॥  
 अैसा नामु निरंजनु होइ ॥  
 जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥  
 मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥  
 मंनै सगल भवण की सुधि ॥  
 मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥  
 मंनै जम कै साथि न जाइ ॥  
 अैसा नामु निरंजनु होइ ॥  
 जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥  
 मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥  
 मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥  
 मंनै मगु न चलै पंथु ॥  
 मंनै धरम सेती सनबंधु ॥  
 अैसा नामु निरंजनु होइ ॥  
 जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥



मंनै	पावहि	मोखु	दुआरु	॥
मंनै	परवारै		साधारु	॥
मंनै	तरै	तारे	गुरु	सिख ॥
मंनै	नानक	भवहि	न	भिख ॥
अैसा	नामु	निरंजनु	होइ	॥
जे	को	मंनि	जाणै	मनि कोइ ॥१५॥
पंच	परवाण	पंच	परधानु	॥
पंचे	पावहि	दरगहि	मानु	॥
पंचे	सोहहि	दरि	राजानु	॥
पंचा	का	गुरु	एकु	धिआनु ॥
जे	को	कहै	करै	वीचारु ॥
करते	कै	करणै	नाही	सुमारु ॥
धौलु	धरमु	दइआ	का	पूतु ॥
संतोखु	थापि	रखिआ	जिनि	सूति ॥
जे	को	बुझै	होवै	सचिआरु ॥

धवलै उपरि केता भारु ॥  
 धरती होरु परै होरु होरु ॥  
 तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥  
 जीअ जाति रंगा के नाव ॥  
 सभना लिखिआ बुड़ी कलाम ॥  
 एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥  
 लेखा लिखिआ केता होइ ॥  
 केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥  
 केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥  
 कीता पसाउ एको कवाउ ॥  
 तिस ते होए लख दरीआउ ॥  
 कुदरति कवण कहा वीचारु ॥  
 वारिआ न जावा एक वार ॥  
 जो तुधु भावै साई भली कार ॥  
 तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

असंख	जप	असंख	भाउ	॥
असंख	पूजा	असंख	तप	ताउ
असंख	गरंथ	मुखि	वेद	पाठ
असंख	जोग	मनि	रहहि	उदास
असंख	भगत	गुण	गिआन	वीचार
असंख	सती	असंख	दातार	॥
असंख	सूर	मुह	भख	सार
असंख	मोनि	लिव	लाइ	तार
कुदरति	कवण	कहा	वीचारु	॥
वारिआ	न	जावा	एक	वार
जो	तुधु	भावै	साई	भली
तू	सदा	सलामति	निरंकार	॥१७॥
असंख	मूरख	अंध	घोर	॥
असंख	चोर	हराम	खोर	॥
असंख	अमर	करि	जाहि	जोर



असंख	गलवढ	हतिआ	कमाहि	॥
असंख	पापी	पापु	करि	जाहि ॥
असंख	कूड़िआर	कूड़े	फिराहि	॥
असंख	मलेछ	मलु	भखि	खाहि ॥
असंख	निंदक	सिरि	करहि	भारु ॥
नानकु	नीचु	कहै	वीचारु	॥
वारिआ	न	जावा	एक	वार ॥
जो	तुधु	भावै	साई	भली कार ॥
तू	सदा	सलामति	निरंकार	॥१८॥
असंख	नाव	असंख	थाव	॥
अगंम	अगंम	असंख	लोअ	॥
असंख	कहहि	सिरि	भारु	होइ ॥
अखरी	नामु	अखरी	सालाह	॥
अखरी	गिआनु	गीत	गुण	गाह ॥
अखरी	लिखणु	बोलणु	बाणि	॥

अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥  
 जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥  
 जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥  
 जेता कीता तेता नाउ ॥  
 विणु नावै नाही को थाउ ॥  
 कुदरति कवण कहा वीचारु ॥  
 वारिआ न जावा एक वार ॥  
 जो तुधु भावै साई भली कार ॥  
 तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

भरीअै - हथु पैरु तनु देह ॥  
 पाणी धोतै उतरसु खेह ॥  
 मूत पलीती कपडु होइ ॥  
 दे साबूणु लईअै ओहु धोइ ॥  
 भरीअै मति पापा कै संगि ॥

ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥  
 पुंनी पापी आखणु नाहि ॥  
 करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥  
 आपे बीजि आपे ही खाहु ॥  
 नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥  
 जे को पावै तिल का मानु ॥  
 सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥  
 अंतर गति तीरथि मलि नाउ ॥  
 सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥  
 विणु गुण कीते भगति न होइ ॥  
 सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥  
 सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥  
 कवणु सु वेला वखतु कवणु ॥



कवण थिति कवणु वारु ॥  
 कवणि सि रुती माहु कवणु  
 जितु होआ आकारु ॥  
 वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥  
 वखतु न पाइओ कादीआ  
 जि लिखनि लेखु कुराणु ॥  
 थिति वारु ना जोगी जाणै  
 रुति माहु ना कोई ॥  
 जा करता सिरठी कउ  
 साजे आपे जाणै सोई ॥  
 किव करि आखा किव सालाही  
 किउ वरनी किव जाणा ॥  
 नानक आखणि सभु को आखै  
 इक दू इकु सिआणा ॥  
 वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥

जपुजी

(१८)

साहिब

नानक जे को आपौ जाणै ।  
अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥

ओड़क ओड़क भालि थके

वेद कहनि इक वात ॥

सहस अठारह कहनि कतेबा

असुलू इकु धातु ॥

लेखा होइ त लिखीअै लेखै होइ विणासु ॥

नानक वडा आखीअै आपे जाणै आपु ॥२२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥

नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥

समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥

कीड़ी तुलि न होवनी जे

तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

अंतु	न	सिफती	कहणि	न	अंतु	॥
अंतु	न	करणै	देणि	न	अंतु	॥
अंतु	न	वेखणि	सुणणि	न	अंतु	॥
अंतु	न	जापै	किआ	मनि	मंतु	॥
अंतु	न	जापै	कीता	आकारु		॥
अंतु	न	जापै	पारावारु			॥
अंत		कारणि	केते	बिललाहि		॥
ता	के	अंत	न	पाए	जाहि	॥
एहु	अंतु	न	जाणै	कोइ		॥
बहुता		कहीअै	बहुता	होइ		॥
वडा		साहिबु	ऊचा	थाउ		॥
ऊचे		उपरि	ऊचा	नाउ		॥
एवडु		ऊचा	होवै	कोइ		॥
तिसु	ऊचे	कउ	जाणै	सोइ		॥
जेवडु	आपि	जाणै	आपि	आपि		॥
नानक	नदरी	करमी	दाति	॥२४॥		



बहुता	करमु	लिखिआ	ना	जांइ	॥
वडा	दाता	तिलु	न	तमाइ	॥
केते	मंगहि	जोध	अपार		॥
केतिआ	गणत	नही	वीचारु		॥
केते	खपि	तुटहि	वेकार		॥
केते	लै	लै	मुकरु	पाहि	॥
केते	मूरख	खाही	खाहि		॥
केतिआ	दूख	भूख	सद	मार	॥
एहि	भि	दाति	तेरी	दातार	॥
बंदि	खलासी	भाणै	होइ		॥
होरु	आखि	न	सकै	कोइ	॥
जे	को	खाइकु	आखणि	पाइ	॥
ओहु	जाणै	जेतीआ	मुहि	खाइ	॥
आपे	जाणै	आपे	देइ		॥
आखहि	सि	भि	केई	केइ	॥
जिस	नो	बखसे	सिफति	सालाह	॥
नानक	पातिसाही	पातिसाहु		॥२५॥	

अमुल	गुण	अमुल	वापार	॥
अमुल	वापारीए	अमुल	भंडार	॥
अमुल	आवहि	अमुल	लै जाहि	॥
अमुल	भाइ	अमुला	समाहि	॥
अमुलु	धरमु	अमुलु	दीबाणु	॥
अमुलु	तुलु	अमुलु	परवाणु	॥
अमुलु	बखसीस	अमुलु	नीसाणु	॥
अमुलु	करमु	अमुलु	फुरमाणु	॥
अमुलो	अमुलु	आखिआ	न जाइ	॥
आखि	आखि	रहे	लिव लाइ	॥
आखहि	वेद	पाठ	पुराण	॥
आखहि	पड़े	करहि	वखिआण	॥
आखहि	बरमे	आखहि	इंद	॥
आखहि	गोपी	तै	गोविंद	॥
आखहि	ईसर	आखहि	सिध	॥
आखहि	केते	कीते	बुध	॥

आखहि दानव आखहि देव ॥  
 आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥  
 केते आखहि आखणि पाहि ॥  
 केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥  
 एते कीते होरि करेहि ॥  
 ता आखि न सकहि केई केइ ॥  
 जेवडु भावै तेवडु होइ ॥  
 नानक जाणै सांचा सोइ ॥  
 जे को आखै बोलु विगाडु ॥  
 ता लिखीअै सिरि गावारा गावारु ॥२६॥  
 सो दरु केहा सो घरु केहा  
 जितु बहि सरब समाले ॥  
 वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥  
 केते राग परी सिउ  
 कहीअनि केते गावणहारे ॥  
 गावहि तुहनो पउणु पाणी



जपुजी

(२३)

साहिब

बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥

गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि

लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥

गावहि इंद इदासणि बैठे

देवतिआ दरि नाले ॥

गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥

गावनि पंडित पड़नि रखीसर

जुगु जुगु वेदा नाले ॥

गावहि मोहणीआ मनु

मोहनि सुरगा मछ पड़आले ॥

गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥

गावहि जोध महाबल

सूरा गावहि खाणी चारे ॥

गावहि खंड मंडल वरभंडा  
 करि करि रखे धारे ॥  
 सेई तुधुनो गावहि जो तुधु  
 भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥  
 होरि केते गावनि से मै चिति  
 न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥  
 सोई सोई सदा सचु साहिबु  
 साचा साची नाई ॥  
 है भी होसी जाइ न जासी  
 रचना जिनि रचाई ॥  
 रंगी रंगी भाती करि करि  
 जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥  
 करि करि वेखै कीता आपणा  
 जिव तिस दी वडिआई ॥  
 जो तिसु भावै सोई करसी  
 हुकमु न करणा जाई ॥

जपुजी

(२५)

साहिब

सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु

नानक रहणु रजाई ॥२७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली  
धिआन की करहि बिभूति ॥

खिंथा कालु कुआरी काइआ  
जुगति डंडा परतीति ॥

आई पंथी सगल जमाती  
मनि जीतै जगु जीतु ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥  
आदि अनीलु अनादि अनाहति

जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि ॥  
घटि घटि वाजहि नाद ॥

आपि नाथु नाथी सभ जा की



जपुजी

(२६)

साहिब

रिधि सिधि अवरा साद ॥

संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि

लेखे आवहि भाग ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जुगु जुगु एको वेसु ॥२६॥

एका माई जुगति विआई तिनि चले परवाणु ॥

इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥

जिव तिसु भावै तिवै चलावै

जिव होवै फुरमाणु ॥

ओहु वेखै ओना नदरि न आवै

बहुता एहु विडाणु ॥

आदेसु तिसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति

जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

जपुजी

(२७)

साहिब

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥  
जो किछु पाइआ सु एका वार ॥  
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥  
नानक सचे की साची कार ॥  
आदेसु तिसै आदेसु ॥  
आदि अनीलु अनादि अनाहति  
जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥  
इक दू जीभौ लख होहि  
लख होवहि लख वीस ॥  
लखु लखु गेड़ा आखीअहि  
एकु नामु जगदीस ॥  
एतु राहि पति पवड़ीआ  
चड़ीअै होइ इकीस ॥  
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥  
नानक नदरी पाईअै कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

| आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥  
 | जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥  
 | जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥  
 | जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥  
 | जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥  
 | जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥  
 | जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥  
 | नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

| राती रुती थिती वार ॥  
 | पवण पाणी अगनी पाताल ॥  
 | तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ॥  
 | तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥  
 | तिन के नाम अनेक अनंत ॥  
 | करमी करमी होइ वीचारु ॥  
 | सचा आपि सचा दरबारु ॥



जपुजी

(२६)

साहिब

तिथै	सोहनि	पंच	परवाणु	॥
नदरी	करमि	पवै	नीसाणु	॥
कच	पकाई	ओथै	पाइ	॥
नानक	गइआ	जापै	जाइ	॥३४॥
धरम	खंड	का	एहो धरमु	॥
गिआन	खंड	का	आखहु करमु	॥
केते	पवण	पाणी	वैसंतर केते कान महेस	॥
केते	बरमे	घाड़ति	घड़ीअहि रूप रंग के वेस	॥
केतीआ	करम	भूमी	मेर केते केते धू उपदेस	॥
केते	इंद	चंद	सूर केते केते मंडल देस	॥
केते	सिध	बुध	नाथ केते केते देवी वेस	॥
केते	देव	दानव	मुनि केते केते रतन समुंद	॥
केतीआ	खाणी	केतीआ	बाणी केते पात नरिंद	॥
केतीआ	सुरती	सेवक	केते	
नानक	अंतु	न	अंतु	॥३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥  
 तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥  
 सरम खंड की बाणी रूपु ॥  
 तिथै घाड़ति घड़ीअै बहुतु अनूपु ॥  
 ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥  
 जे को कहै पिछै पछुताइ ॥  
 तिथै घड़ीअै सुरति मति मनि बुधि ॥  
 तिथै घड़ीअै सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

करम खंड की बाणी जोरु ॥  
 तिथै होरु न कोई होरु ॥  
 तिथै जोध महाबल सूर ॥  
 तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥  
 तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥  
 ता के रुप न कथने जाहि ॥

ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥  
 जिन कै रामु वसै मन माहि ॥  
 तिथै भगत वसहि के लोअ ॥  
 करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥  
 सच खंडि वसै निरंकारु ॥  
 करि करि वेखै नदरि निहाल ॥  
 तिथै खंड मंडल वरभंड ॥  
 जे को कथै त अंत न अंत ॥  
 तिथै लोअ लोअ आकार ॥  
 जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥  
 वेखै विगसै करि वीचारु ॥  
 नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥  
 जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥  
 अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥  
 भउ खला अगनि तप ताउ ॥



जपुजी

(३२)

साहिब

भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥  
घड़ीअै सबदु सची टकसाल ॥  
जिन कउ नंदरि करमु तिन कार ॥  
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

॥ सलोकु ॥

पवणु गुरु पाणी पिता माता धरति महतु ॥  
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ  
खेलै सगल जगतु ॥  
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥  
करमी आपो आपणी के नेडै के दूरि ॥  
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥  
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥९॥

श्री जपु जी साहिब समाप्त

## सूही महला ५ (७४१-४२)

दरसनु देखि जीवा गुर तेरा ॥

पूरन करमु होइ प्रभ मेरा ॥१॥

इह बेनंती सुणि प्रभ मेरे ॥

देहि नामु करि अपणे चेरे ॥१॥ रहाउ ॥

अपणी सरणि राखु प्रभ दाते ॥

गुर प्रसादि किनै विरलै जांते ॥२॥

सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥

चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥३॥

नानकु एक करै अरदासि ॥

विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥४॥१८॥२४॥

## (दसम ग्रंथ)

नमसत्यं नमसत्यं नमसत्यं भवानी ॥

सदा राख लै मुहि कृपा कै कृपानी ॥

सभै संत उबारी बरं ब्यूह दाता ॥

नमो तारणी कारणी लोक माता ॥

नमसत्यं नमसत्यं नमसत्यं भवानी ॥

सदा राख लै मुहि कृपा कै कृपानी ॥३७॥२५६॥॥